

# शब्दशिखर

अंक 11, वर्ष 2021



# शब्दशिखर

साहित्य, संस्कृति एवं जनचेतना की पत्रिका

लेखकीय प्रति

ISSN : 0976-5719

अंक 11  
जनवरी, 2021

संस्थापक  
राधिकाप्रसाद त्रिपाठी

संपादक  
आनन्दप्रकाश त्रिपाठी

उप-संपादक  
सुंदरम शांडिल्य



## प्रकाशक

साहित्य-संस्कृति संस्थान, नहरबाग, अयोध्या-224001 (उत्तरप्रदेश)

रेखांकन : अर्चना द्विवेदी, सागर

शब्द संयोजन : एक्टिव कम्प्यूटर्स : नमकमंडी, कटरा बाजार, सागर (म.प्र.)

सम्पादकीय पत्र व्यवहार : कथायन, पटेल का बगीचा, यादव कालोनी, सागर (म.प्र.)-470001

दूरभाष : (07582) 228410, मोबाइल : 09425656284, ईमेल-[aptripathihindi@gmail.com](mailto:aptripathihindi@gmail.com)

मूल्य : एक प्रति 50 रु., चार अंक 200 रु., आजीवन 2000 रु.

सारे भुगतान मनीआर्डर/चैक/बैंक ड्राफ्ट आनन्दप्रकाश त्रिपाठी के नाम से किए जाए।

सागर से बाहर चैक में बैंक कमीशन के 30 रु. अतिरिक्त जोड़ें।

संपादन-संचालन एवं प्रकाशन : अवैतनिक, अव्यावसायिक एवं वार्षिक।

प्रकाशित रचनाओं/आलेखों आदि की रीति-नीति या विचारों से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं है।

समस्त कानूनी विवादों का न्यायक्षेत्र अयोध्या (उ.प्र.) होगा।

## अनुक्रम

सम्पादकीय / 3

सामयिक चिंतन

साहित्य, संस्कृति और वर्चस्वी तत्त्वों के आनुषंगिक प्रक्षेपण : शशिमूषण द्विवेदी / 5

वर्तमान समय में सृजन की चुनौतियाँ : करुणाशंकर उपाध्याय / 11

संस्कृति एवं कला

रामायण का सत्य और महाभारत का धर्म : अम्बिकादत्त शर्मा / 15

काव्य और चित्रकला का अंतर्संबंध : कानन लागे कान : श्यामसुंदर दुबे / 29

संस्मरण

उसने ये जाना कि गोया ये भी मेरे दिल में था : सूरज पालीवाल / 32

बातचीत

हिंदी का भला भारत सरकार ने नहीं, बॉलीवुड ने किया है! : हंस हार्डर से पंकज पराशर / 40

डायरी

मुक्तिबोध : भारतीय लोकतंत्र के आलोचक : बलिराज पाण्डेय / 45

विशेष कवि

बारह कविताएँ : राकेश मिश्र / 50

राकेश मिश्र की कविताएँ—जीवन सत्य का खुरदुरापन : रमा / 55

आलेख

सभी प्रकार की परिधियों के अतिक्रमण का सहज साध्य प्रयास : ए. अरविंदाक्षन / 60

प्रतिबद्धता केवल विचार नहीं है : लक्ष्मी पाण्डेय / 63

विश्वनाथप्रसाद तिवारी की कविता : मानवीय उदात्तता की संवेदनशील आकांक्षा : व्यासमणि त्रिपाठी / 67

विचार समृद्ध सहज कविता का वैविध्यपूर्ण अनुभव लोक : कृष्णचंद्र लाल / 73

इक्कीसवीं सदी की कहानी—पहला दशक : आख्यान में ढलता समय : नीरज खरे / 81

परिपक्वधर्मी अज्ञेय का आलोचना—बोध : आशुतोष / 86

कविता

तुम्हारी जय ऐसी न थी, मैं जब खुश होता हूँ, रुमाल, यह पृथ्वी हमारा घर है : नरेन्द्र पुण्डरीक / 93

कहानी

इस तरह : महेश कटारे 'सुगम' / 95

यात्रा : मीरा चन्द्रा / 98

लघुकथा

ताबीज, एहसास : दिनेश चमोला 'शैलेश' / 14, 72

सफलता : राम स्वरूप दीक्षित / 85

व्यंग्य

नया बाप मिलने की खुशी : रामस्वरूप दीक्षित / 101

लोक

भिखारी ठाकुर और उनका लोकनाट्य बिदेसिया : दर्शन पाण्डेय / 102

पुर्नपाठ

जटिल जिंदगी की सरल कहानी—परदा : विवेक श्रीवास्तव / 107

मनुष्य के महत्त्व की कथा—कर्मनाशा की हार : रंजना पाण्डेय / 110

समीक्षा

गिरहें खोलतीं कहानियाँ : लक्ष्मी पाण्डेय / 113

संघर्ष भरे जीवन की आत्मकथा : अम्बिका प्रसाद / 118

# परिपृच्छाधर्मी अज्ञेय का आलोचना-बोध

## आशुतोष

सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' आधुनिक भारतीय बुद्धिजीवी एवं चिन्तक-रचनाकार हैं। हिन्दी साहित्य के इतिहास का एक पूरा दौर अज्ञेय की रचनात्मक उपस्थिति का साक्षी रहा है। अज्ञेय का सृजनात्मक साहित्य अपने स्तर पर हिन्दी साहित्य की परिपक्वता और समृद्धि का उदाहरण है। स्वतंत्रता बाद के साहित्यिक परिदृश्य को जिन रचनाकारों ने सर्वाधिक संवादी और गतिशील बनाया उनमें अज्ञेय अग्रणी हैं। सृजनात्मक साहित्य के रूप में अज्ञेय ने कविता, कहानी और उपन्यास जैसी साहित्यिक विधाओं में उल्लेखनीय लेखन किया है। अज्ञेय के लेखन में भाव और विचार का संतुलित एवं समेकित संयोजन देखने को मिलता है। अर्थात् भाव जो विचार के द्वारा और विचार जो भाव के द्वारा पूरित हो। दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि अज्ञेय ने अपनी अनुभूति को विचार में और विचार को अनुभूति में घुला दिया था।

सृजनात्मक साहित्य के अतिरिक्त अज्ञेय अपनी आलोचनात्मक कृतियों द्वारा भी अपनी उपस्थिति को सार्थक बनाये हुए थे। अज्ञेय का आलोचनात्मक लेखन मुख्य रूप से मार्क्सवाद की साहित्यिक अभिव्यक्ति प्रगतिवाद जैसे महत्वपूर्ण काव्य आन्दोलन के बरक्स माना जाता है। अज्ञेय बहुश्रुत एवं बहुपठित रचनाकार थे। सृजन और विचार के सम्बन्ध में उनकी अपनी एक मुकम्मल राय है। अपने विचारों की मौलिकता एवं विशिष्ट चिन्तन-प्रक्रिया के चलते वे हमेशा बहसों एवं विवादों के केन्द्र में रहे। यह बिडम्बना ही कही जायेगी कि अज्ञेय के शुरुआती लेखन पर विदेशी वैचारिकता से प्रभावित एवं भारतीय मूल्यों को नकारने का तथा उनके जीवन के उत्तरार्ध के लेखन में भारतीय सांस्कृतिक परम्परा के समर्थक होने का आरोप लगा। यह अज्ञेय सम्बन्धी हिन्दी आलोचना की दुविधा ही है। किन्तु यह दुविधा आलोचना की है आलोच्य-विषय की

नहीं। आलोचक जब कृति के मूल्यांकन में दुविधाग्रस्त होते हैं, तब स्वयं रचनाकार आलोचना-कर्म में प्रणत हुए हैं। केवल हिन्दी में इसके कई उदाहरण मौजूद हैं। वैसे भी एक रचनाकार के बहुत भीतरी बुनावट में एक गहरा आलोचनात्मक-विवेक होता ही है। इस दृष्टि से देखें तो अज्ञेय का आलोचनात्मक-बोध उनके सृजनात्मक-बोध का वैचारिक अधिष्ठान है।

अज्ञेय के आलोचना-बोध को स्पष्ट करते हुए मधुरेश ने लिखा है कि "वे उसे पॉल वैलरी और टी.एस. एलियट की समीक्षात्मक रचनाओं की तरह मुख्यतः साहित्यकार की निर्माणशाला में प्रसूत आलोचना का उदाहरण मानते हैं। आलोचना के क्षेत्र में उनका हस्तक्षेप किसी व्यवस्थित और वस्तुपरक आलोचना का उदाहरण न होकर साहित्य, कला और काव्य-संबंधी उनके अपने विचारों की ही व्याख्या हैं। आंदोलन और संगठन की उनमें विशेष क्षमता थी। आधुनिक कवियों को संगठित करने और आधुनिक भावबोध को विस्तार देने में उनकी विशिष्ट भूमिका रही है। चार सप्तकों के अट्ठाइस कवियों के अतिरिक्त उन्होंने रघुवीर सहाय, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना और अजितकुमार जैसे कवियों की रचनाओं के प्रतिनिधि चयन की भूमिकाएं लिखीं।"

अपनी इस टिप्पणी में मधुरेश अज्ञेय के आलोचना-बोध के सन्दर्भ में जिन तत्त्वों को रेखांकित करते हैं वे क्रमशः इस प्रकार हैं— अज्ञेय की आलोचना पर पॉल वैलरी और टी.एस. एलियट का प्रभाव है, अज्ञेय आलोचना को साहित्यकार की निर्माणशाला में निर्मित विचार मानते हैं, अज्ञेय की आलोचना व्यवस्थित और वस्तुपरक नहीं है, अज्ञेय की आलोचना साहित्य, कला और काव्य सम्बन्धी अपने ही विचारों की व्याख्या है तथा अज्ञेय ने अपने समय के महत्वपूर्ण कवियों का भूमिका आदि माध्यमों से मूल्यांकन किया। अब यहाँ थोड़ा ठहर कर डॉ. भगीरथ मिश्र को सुनना लाजिमी है,